Volume: 5 Issue: 3 Pages: 123-125

राष्ट्रीय चेतना का विकासः एक अध्ययन (बिलासपुर जिले के सन्दर्भ में)

[*1] डॉ. रश्मि सोनी

[*1] शिक्षिका, प्राथमिक शाला बिरकोना, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 24/Feb/2026
Accepted: 23/March/2026

***Corresponding Author**
डॉ. रश्मि सोनी
शिक्षिका, प्राथमिक शाला बिरकोना, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश
बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय चेतना का उदय और विकास एक दीर्घकालीन प्रक्रिया रही है, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप विकसित हुई। यह केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रही, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही। बिलासपुर के लोगों ने अपने संघर्ष, त्याग और समर्पण के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया और देश की स्वतंत्रता में अपना योगदान दिया। यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रेरणास्रोत है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय चेतना के उदय एवं विकास का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक आंदोलन का परिणाम नहीं थी, बल्कि सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों का संयुक्त प्रभाव थी। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के विरुद्ध उत्पन्न असंतोष, शिक्षा का प्रसार, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव ने बिलासपुर क्षेत्र में राष्ट्रवाद की भावना को विकसित किया। यह शोध-पत्र 19वीं शताब्दी से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक के विभिन्न चरणों का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्दः राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय चेतना का उदय, स्वतंत्रता ....इत्यादि।

प्रस्तावना:

सन् 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक असाधारण घटना थी। इसके कारण ब्रिटिश शासन का ध्यान भारतवर्ष में कम्पनी के शासन की बुराइयों की ओर आकृष्ट हुआ। परिणाम स्वरूप नवंबर सन् 1958 ई. को ब्रिटिश संसद ने भारतवर्ष से कंपनी के शासन का अन्त कर भारतीय प्रशासन को अपने हाथो में ले लिया लेकिन सत्ता के इस हस्तांतरण से भारतीय जनता को कष्टों और उनकी विदेशी शासन विरोधी भावनाओं में कोई कमी नहीं हुई, इन्हीं भावनाओं ने बाद में राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया। राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ बड़े शहरों का योगदान महत्वपूर्ण रहा, वहीं छोटे जिलों ने भी राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया। बिलासपुर जिला इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है, जहाँ राष्ट्रीय चेतना का विकास क्रमिक रूप से हुआ।

राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र के निर्माण की मूल आधारशिला होती है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जागरूकता का समन्वित रूप है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ एक ओर महानगरों और बड़े राजनीतिक केंद्रों की भूमिका रही, वहीं दूसरी ओर छोटे जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों ने भी राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। छत्तीसगढ़ (पूर्व में मध्य प्रदेश का भाग) का बिलासपुर जिला भी इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ राष्ट्रीय चेतना का उदय धीरे-धीरे सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार, पत्रकारिता, तथा स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों के माध्यम से हुआ।

अध्ययन के उद्देश्य

- बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय चेतना के उदय के कारणों का विश्लेषण करना।
- स्वतंत्रता संग्राम में स्थानीय योगदान का अध्ययन करना।

शोध पद्धति: यह अध्ययन मुख्यतः ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पर आधारित है।

भारत में राष्ट्रीय भावना के उद्देश्य के कारण

भारतवर्ष में राष्ट्रीयता का उदय कांग्रेस की स्थापना के साथ माना जाता है। कांग्रेस ने स्वतंत्रता के संघर्ष में सदैव केन्द्र का कार्य किया। यह वह धुरी थी जिसके चारों ओर स्वतंत्रता की घटनाएँ घटित हुई। भारतीय राष्ट्रवाद राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारणों के

संयोग का परिणाम था। सन् 1957 की क्रांति के कारण भारतीयों में अंग्रेजों से बदला लेने की भावना बलवती हो गई थी, दोनों में एक-दूसरे के प्रति घृणा की भावना भी थी।

विषयवस्तु

बिलासपुर जिला ऐतिहासिक रूप से छत्तीसगढ़ क्षेत्र का प्रमुख हिस्सा रहा है। यह क्षेत्र प्राचीन काल में दक्षिण कोसल का भाग था। मध्यकाल में यह विभिन्न राजवंशों के अधीन रहा और बाद में अंग्रेजों के नियंत्रण में आ गया। ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ ही यहाँ प्रशासनिक परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव स्थानीय समाज पर पड़ा। अंग्रेजों की नीतियों से उत्पन्न आर्थिक शोषण, भूमि व्यवस्था में परिवर्तन, तथा सामाजिक असमानताओं ने धीरे-धीरे लोगों में असंतोष पैदा किया, जो आगे चलकर राष्ट्रीय चेतना के रूप में विकसित हुआ।

बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय चेतना का विकास

भारतवर्ष में जिन कारणों के फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, उनसे छत्तीसगढ़ बिलासपुर जिला भी प्रभावित हुए बिना न रह सका। यहाँ भी असंतोष के स्वर मुखरित हुए, जिससे छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय चेतना का अविर्भाव हुआ। इस प्रकार यह क्षेत्र भी देश की मुख्य धारा से जुड़ा रहा। छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र है। बिलासपुर जिले में (छत्तीसगढ़) में कई कारणों राजनीतिक, सामाजिक धार्मिक, आर्थिक एवं अन्य कारणों से बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ जिनके विस्तृत जानकारियों से स्पष्ट होता है।

सन् 1916 ई. में श्रीमती एनीबेसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की इसके द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन को देशव्यापी बनाया गया। इसकी शाखाएँ छत्तीसगढ़ में भी स्थापित हुई, इसकी सफलता के लिए श्री मूलचन्द बागड़ी, माधवराव सप्रे और लक्ष्मण राव के प्रयास उल्लेखनीय हैं। इसी वर्ष रायपुर में प्रान्तीय सभा की स्थापना हुई, जिसमें पं. रविशंकर शुक्ल, श्री वामनराव लाखे, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, ठाकुर मनमोहन सिंह, श्री कुंजबिहारी अग्निहोत्री आदि शामिल हुए। पं. सुंदरलाल शर्मा द्वारा राजिम में आयोजित किसान सम्मेलन भी एक उल्लेखनीय घटना थी। सन् 1918 ई. में रायपुर में होमक्षल लीग का सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें क्षेत्रीय नेताओं ने प्रभावी भाषण दिया।

बिलासपुर जिले में राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रदूत ई. राघवेन्द्र राव, कुंजबिहारी अग्निहोत्री और बैरिस्टर छेदीलाल सिंह थे। ई. राघवेन्द्र राव की शिक्षा इंग्लैण्ड में हुई थी, वे यंग इण्डिया से सम्बद्ध रहे, जिसकी स्थापना वीर सावरकर ने की थी। सन् 1907 ई. में उन्होंने सूरत के कांग्रेस अधिवेशन में क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। वे कांग्रेस के गरम और नरम दल के बीच समझौता कराने के समर्थक थे। इस दिशा में वे प्रयत्न करते रहे वे अपने विचारों से तिलक के करीब थे। उने राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने से ही वे बिलासपुर म्युनिस्पल कौंसिल के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने म्युनिस्पल कौंसिल का उपयोग राष्ट्रीय आंदोलन के प्रसार हेतु किया। वे बिलासपुर जिला परिषद् के सचिव भी निर्वाचित हुए। इन दिनों संस्थाओं के कर्मचारियों के लिए खादी पहनना अनिवार्य कर दिया गया तथा तिलक और गांधी जयन्ती की छुट्टियां घोषित की गयी। स्वायत्त संस्थाओं की इमारतों पर अब राष्ट्रीय झण्डा लहराने लगा, स्कूल में वन्देमातरम् का गीत गाया जाने लगा।

कांग्रेस ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया। इस समय दोनों सम्प्रदाय से लोग परस्पर सहयोग कर रहे थे। सन् 1902 ई. में बिलासपुर में जिला कांग्रेस का सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. मुंजे ने की। सभा में ई. राघवेन्द्र राव का प्रभावी भाषण हुआ। उन्होंने अपने भाषण में ब्रिटिश सरकार की नीतियों की कटु निन्दा की। यहां के लोग गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग आंदोलन में उत्साह के साथ भाग ले रहे थे। बड़ी संख्या में लोगों ने सरकारी नौकरियों का त्याग किया और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया, इसी वक्त देशभक्त श्री क्रांतिकुमार भारतीय का बिलासपुर आगमन हुआ, उनकी कृतियों को जानकर यहाँ के लोग उनसे बहुत प्रभावित हुए। सन् 1919 ई. में रोलेट एक्ट के विरोध में देशव्यापी हड़ताल हुई और जनसभाएँ आयोजित की गई। इसी दौरान डॉ. प्यारेलाल सिंह ने बी. एन. सी. मिल के मजदूरों को संगठित करना आरंभ कर दिया फलस्वरूप अप्रेल सन् 1920 ई. में राजनांदगाँव में मजदूरों की 36 दिनों की ऐतिहासिक हड़ताल हुई। इस सिलसिले में श्रमिक नेता श्री गिरि का यहां आगमन हुआ। अन्ततः यह हड़ताल मजदूरों के हित में समाप्त हुई और ठाकुर साहब की लोकप्रियता सरकारी अधिकारियों को अच्छी नहीं लगी, परिणामतः उन्हें राजनांदगाँव की सीमा से निष्कासित कर दिया गया। ठाकुर साहब ने इस सरकारी आदेश के खिलाफ गवर्नर के समक्ष अपील की, फैसला ठाकुर साहब के पक्ष में हुआ तथा उनका निष्कासन आदेश रद्द कर दिया गया। मजदूरों की हड़ताल ने राष्ट्रीय आंदोलन की काफी शक्ति प्रकट की, सन् 1920 ई. में जब असहयोग आंदोलन आरंभ हुआ तब राजनांदगाँव में हड़तालें की गई, सभाएँ और जुलूसों का आयोजन कर ब्रिटिश शासन के खिलाफ बहिष्कार की नीति अपनायी गयी।

स्थानीय नेताओं का योगदान

बिलासपुर जिले में अनेक स्थानीय नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने त्याग, संघर्ष और नेतृत्व के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। स्थानीय कांग्रेस नेताओं ने जनसभाओं का आयोजन किया।स्वतंत्रता सेनानियों ने जेल यात्राएँ कीं।ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों को आंदोलन से जोड़ा।

किसानों और श्रमिकों की भूमिका

बिलासपुर एक कृषिप्रधान क्षेत्र रहा है। यहाँ के किसानों ने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।किसानों ने करों के विरोध में आंदोलन किए।श्रमिक वर्ग ने हड़तालों के माध्यम से अंग्रेजी शासन का विरोध किया।ग्रामीण जनता ने राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक आधार प्रदान किया।

महिलाओं की भागीदारी

राष्ट्रीय आंदोलन में बिलासपुर की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।महिलाओं ने सभाओं और आंदोलनों में भाग लिया।विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में सक्रिय योगदान दिया। सामाजिक सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया।

कण्डेल का आंदोलन

इन दिनों छत्तीसगढ़ में शासन के खिलाफ आंदोलन करने के लिए लोगों में गजब का उत्साह था। 20 सितम्बर सन् 1920 ई. को कण्डेल नहर सत्याग्रह के सन्दर्भ में गांधीजी का रायपुर आगमन हुआ, वे कुरूद और धमतरी भी गए, गांधी के आगमन से यहां की जनता में अपूर्व उत्साह का संचार हुआ। क्षेत्रीय जनता में आंदोलन के लिए स्फूर्ति दिखाई पड़ी, यहां असहयोग आंदोलन तेजी से चलने लगा, नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के लिए इस अंचल से अनेक लोग वहां पहुंचे। कण्डेल नहर सत्याग्रह का दत्तीसगढ़ के इतिहास में विशेष महत्व है। वह इस क्षेत्र में राष्ट्रीय जागृति के विकास में सहायक हुआ। यह आंदोलन सरकारी अन्याय का प्रतिफल था, जो अन्तः किसानों के हित में समाप्त हुआ, इस घटना ने छत्तीसगढ़ के राष्ट्रीय आंदोलन को नयी शक्ति प्रदान की।

छत्तीसगढ़ की विशेष पिछड़ी जनजातियाँ

भारतीय संविधान के तहत राष्ट्रपति द्वारा छत्तीसगढ़ की 5 जनजातियों तथा राज्य सरकार द्वारा 2 जनजातियों (कुल 07) को विशेष पिछड़ी जनजाति के अंतर्गत शामिल किया गया है।

भारत सरकार द्वारा: अबूझमाड़िया, बैगा, बिरहोर, पहाड़ी कोरवा, कमार
राज्य सरकार द्वारा: पंडो, भुंजिया

निष्कर्ष:
राष्ट्रीय चेतना किसी भी राष्ट्र के निर्माण की मूल आधारशिला होती है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जागरूकता का समन्वित रूप है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ एक ओर महानगरों और बड़े राजनीतिक केंद्रों की भूमिका रही, वहीं दूसरी ओर छोटे जिलों और ग्रामीण क्षेत्रों ने भी राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। छत्तीसगढ़ (पूर्व में मध्य प्रदेश का भाग) का बिलासपुर जिला भी इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ राष्ट्रीय चेतना का उदय धीरे-धीरे सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार, पत्रकारिता, तथा स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों के माध्यम से हुआ। आज बिलासपुर जिला छत्तीसगढ़ का एक महत्वपूर्ण शैक्षिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक केंद्र है। यहाँ राष्ट्रीय चेतना अब विकास, शिक्षा और सामाजिक समरसता के रूप में प्रकट होती है।

सन्दर्भ सूची:

1. कनिंघम: अर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इंडिया, जिल्द-17, पृष्ठ 68.
2. हीरालाल: इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द 62, 1993, पृष्ठ 16.
3. मिश्रा, पी. एल.: पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ छत्तीसगढ़, 1979, पृष्ठ 256.
4. हेविट सेटलमेंट रिपोर्ट, 1869, पृष्ठ 85, इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया, खंड 10, 1908, पृष्ठ 76
5. जैन्किन्स की सप्लीमेंट रिपोर्ट, 1927, पार्ट 5.
6. मिश्रा, पी.एल. पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ छत्तीसगढ़, 1979, पृष्ठ 255.
7. फोरेन एण्ड पोलिटिकल करेसपाडिंग फाइन नं. 93, 1840.
8. चीशम की सेटलमेंट रिपोर्ट, 1868, पैरा 35.
9. शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ (इतिहास खण्ड), 1955, पृष्ठ 129.
10. मिश्रा, पी.एल. पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ छत्तीसगढ़, 1979, पृष्ठ 286.
11. डॉ. भगवान सिंह वर्मा, छत्तीसगढ़ का इतिहास, पृष्ठ 208-209.
12. वही, पृष्ठ 211-212.
13. भट्ट, एस. सी (संपादन), द, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ छत्तीसगढ़ (2003), ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, आईएसबीएन-10-8121207738, 14. सुमित सरकार (1983). आधुनिक भारत. नई दिल्लीः मैकमिलन। पृ. 54-78।
14. आर.के. शर्मा (1987). भारत का आर्थिक इतिहास. दिल्लीः विश्वविद्यालय प्रकाशन। पृ. 110-130।
15. एस.पी. वर्मा (1992). छत्तीसगढ़ का इतिहास. भोपालः मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी। पृ. 80-95।
16. आर.एन. तिवारी (2001). भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन. जयपुरः प्रकाशन संस्थान। पृ. 135-150।
17. पी.सी. जोशी (1995). भारत में पत्रकारिता और राष्ट्रीय चेतना. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पृ. 60-75।
18. ज्ञानेंद्र पांडेय (1998). औपनिवेशिक भारत में साम्प्रदायिकता का निर्माण. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड। पृ. 170-180।
19. एस.एन. मिश्रा (2003). मध्य भारत में स्वतंत्रता आंदोलन. दिल्लीः प्रकाशन विभाग। पृ. 220-230।
20. भारत सरकार (1969). जिला गजेटियरः बिलासपुर. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग। पृ. 45-120।
21. हरमन कुल्के एवं डिटमार रोदरमुंड (2004). भारत का इतिहास. नई दिल्लीः रूटलेज। पृ. 290-310।